Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 01, January. 2026

# भारतीय हस्तशिल्प: कला, संस्कृति, सामाजिक संरचना एवं अर्थव्यवस्था

अर्चना गर्ग

असिस्टेंट प्रोफेसर, (चित्रकला विभाग ), स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज , शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश.

**Abstract**: भारतीय सभ्यता की पहचान उसकी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं, कलात्मक अभिव्यक्तियों एवं श्रम आधारित उत्पादन प्रणालियों से होती है। इन्हीं परंपराओं में भारतीय हस्तशिल्प का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। हस्तशिल्प केवल वस्तु निर्माण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति तथा आर्थिक जीवन का मूर्त रूप है। भारतीय हस्तशिल्प उद्योग सदियों से ग्रामीण एवं नगरीय समाज की आजीविका का आधार रहा है तथा आज भी यह क्षेत्र करोड़ों लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान कर रहा है। हस्तशिल्प उद्योग का स्वरूप मुख्यतः श्रमप्रधान है, जिसमें पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय कौशल एवं प्राकृतिक संसाधनों का समन्वित उपयोग किया जाता है। आधुनिक औद्योगिक उत्पादन प्रणालियों से भिन्न, हस्तशिल्प मानवीय सृजनशीलता एवं सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखता है। इस दृष्टि से हस्तशिल्प उद्योग न केवल आर्थिक गतिविधि है, बल्कि यह सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर का वाहक भी है।.

**Keywords:** हस्तशिल्प, संस्कृति, पारंपरिक तकनीक,श्रम प्रधान उद्योग, रोजगार परक, सांस्कृतिक धरोहर।.

हस्तशिल्प से अभिप्राय उन वस्तुओं से है जिनका निर्माण मुख्यतः मानव हाथों द्वारा पारंपरिक तकनीकों के माध्यम से किया जाता है। इन वस्तुओं में उपयोगिता एवं सौंदर्य का समन्वय पाया जाता है। हस्तशिल्प में कच्चे माल के रूप में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों—जैसे मिट्टी, लकड़ी, पत्थर, धातु, रेशा, चमड़ा, बांस आदि—का प्रयोग किया जाता है। हस्तशिल्प श्रमप्रधान उद्योग है। इसमें न्यूनतम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।उत्पादन प्रक्रिया पारंपरिक ज्ञान पर आधारित होती है।प्रत्येक क्षेत्र के शिल्प में स्थानीय संस्कृति की झलक मिलती है।हस्तशिल्प उद्योग विकासशील देशों,विशेषकर भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

भारतीय हस्तशिल्प का इतिहास मानव सभ्यता के प्रारंभ से जुड़ा हुआ है। सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त मिट्टी के बर्तन, मुहरें, आभूषण तथा कांस्य प्रतिमाएँ उस काल में विकसित शिल्पकला का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। वैदिक काल में कुम्भकार, बुनकर, स्वर्णकार, लोहार जैसे पेशे सामाजिक संरचना का अंग बन चुके थे। मौर्य एवं गुप्त काल को भारतीय शिल्पकला का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। इस काल में मूर्तिकला, धातु शिल्प एवं वस्त्र निर्माण उच्च स्तर पर पहुँचा। मध्यकाल में मुगल शासकों के संरक्षण में कढ़ाई, वस्त्र, कालीन एवं धातु शिल्प अत्यधिक विकसित हुए। ब्रिटिश शासन के दौरान मशीन निर्मित वस्तुओं के आगमन से हस्तशिल्प उद्योग को भारी क्षति पहुँची, किंतु स्वतंत्रता के पश्चात सरकारी प्रयासों से इस क्षेत्र को पुनर्जीवित करने की दिशा में कार्य किया गया।

भारत की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता का सीधा प्रभाव हस्तशिल्प उद्योग पर दिखाई देता है। प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों एवं सांस्कृतिक परंपराओं के अनुरूप विशिष्ट शिल्प शैलियाँ विकसित हुई हैं। उत्तर भारत में बनारसी वस्त्र, मुरादाबाद का धातु शिल्प, फिरोजाबाद का काँच उद्योग, सहारनपुर की लकड़ी नक्काशी प्रमुख हैं। पश्चिम भारत में राजस्थान की ब्लू पॉटरी, बांधनी, लाख शिल्प एवं गुजरात की कच्छ कढ़ाई विशेष पहचान रखती है। पूर्वी भारत में पश्चिम बंगाल का टेराकोटा एवं जूट शिल्प, ओडिशा का पत्ताचित्र तथा असम का बांस-बेंत शिल्प प्रसिद्ध है। दक्षिण भारत में तमिलनाडु का कांसा शिल्प, आंध्रप्रदेश की कलमकारी तथा केरल का कायर उद्योग उल्लेखनीय हैं। जम्मू-कश्मीर का पेपरमेशी एवं कसीदाकारी भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है।

भारतीय हस्तशिल्प समाज की सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग है। प्रत्येक शिल्प शैली स्थानीय धार्मिक विश्वासों, लोक परंपराओं एवं सामाजिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है। हस्तशिल्प का ज्ञान सामान्यतः पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता है, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है।

हस्तशिल्प ग्रामीण समाज में सामूहिकता, पारिवारिक सहभागिता एवं सामाजिक सहयोग को प्रोत्साहित करता है। यह न केवल आर्थिक गतिविधि है, बल्कि सामाजिक पहचान एवं आत्मसम्मान का भी स्रोत है। विभिन्न पर्वों, अनुष्ठानों एवं धार्मिक आयोजनों में हस्तनिर्मित

Received **06 January. 2025**; Accepted **20 January. 2026**. Available online: **30 January. 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 01, January. 2026

वस्तुओं का प्रयोग इस शिल्प के सांस्कृतिक महत्व को और अधिक सुदृढ़ करता है।

आर्थिक दृष्टि से हस्तशिल्प उद्योग भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ के समान है। यह उद्योग स्वरोजगार को बढ़ावा देने के साथ-साथ बड़े पैमाने पर अप्रत्यक्ष रोजगार भी उत्पन्न करता है। कच्चे माल की आपूर्ति, परिवहन, विपणन एवं निर्यात जैसी सहायक गतिविधियाँ इस क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं।

हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय है। कढ़ाई, बुनाई, जूट, कायर एवं वस्त्र शिल्प जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की सक्रिय भूमिका महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है। इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों की बढ़ती मांग विदेशी मुद्रा अर्जन का महत्वपूर्ण स्रोत है।

वैश्वीकरण के युग में हस्तशिल्प उद्योग को नए अवसरों एवं चुनौतियों दोनों का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच के नए मार्ग खुले हैं, वहीं दूसरी ओर मशीन निर्मित सस्ते उत्पादों से प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। उपभोक्ता प्राथमिकताओं में बदलाव तथा डिज़ाइन नवाचार की आवश्यकता ने इस क्षेत्र को प्रभावित किया है।

हालाँकि, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, डिजिटल मार्केटिंग एवं अंतरराष्ट्रीय हस्तशिल्प मेलों के माध्यम से भारतीय हस्तशिल्प को वैश्विक पहचान मिल रही है। यदि गुणवत्ता, डिज़ाइन एवं ब्रांडिंग पर विशेष ध्यान दिया जाए, तो वैश्वीकरण हस्तशिल्प उद्योग के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है।

हस्तशिल्प उद्योग के समक्ष अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं। मशीन निर्मित वस्तुओं की कम लागत एवं तीव्र उत्पादन क्षमता हस्तनिर्मित उत्पादों के लिए प्रतिस्पर्धात्मक चुनौती प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त, कारीगरों को कच्चे माल की अनियमित उपलब्धता, सीमित वित्तीय संसाधन, तकनीकी पिछड़ापन एवं विपणन सुविधाओं के अभाव का सामना करना पड़ता है।

बिचौलियों की भूमिका कारीगरों के शोषण का एक प्रमुख कारण है, जिससे उन्हें उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। युवा पीढ़ी का इस क्षेत्र से विमुख होना भी दीर्घकालीन समस्या के रूप में उभर रहा है।

भारत सरकार द्वारा हस्तशिल्प उद्योग के संरक्षण एवं विकास हेतु अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना, GI टैग, ODOP योजना, डिज़ाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं वित्तीय सहायता योजनाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित हस्तशिल्प मेले, प्रदर्शनियाँ एवं अंतरराष्ट्रीय एक्सपो कारीगरों को बाजार उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। इन प्रयासों से हस्तशिल्प उद्योग को पुनर्जीवित करने की संभावनाएँ सुदृढ़ हुई हैं।

भविष्य की दृष्टि से हस्तशिल्प उद्योग में अपार संभावनाएँ निहित हैं। यदि पारंपरिक शिल्प को आधुनिक तकनीक, डिज़ाइन नवाचार एवं वैश्विक बाजार की मांगों के अनुरूप विकसित किया जाए, तो यह उद्योग आर्थिक रूप से और अधिक सशक्त हो सकता है।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण, डिज़ाइन विकास, डिजिटल साक्षरता एवं ब्रांडिंग के माध्यम से कारीगरों को सशक्त बनाया जा सकता है। इसके साथ ही, सतत विकास एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से हस्तशिल्प उद्योग अत्यंत अनुकूल है, क्योंकि यह प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करता है।

**निष्कर्ष**

अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय हस्तशिल्प कला, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था का एक समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करता है। यह उद्योग केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक समावेश एवं आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने का एक प्रभावी माध्यम है। आवश्यक है कि नीति-निर्माता, शैक्षणिक संस्थान एवं समाज मिलकर हस्तशिल्प उद्योग के सतत विकास हेतु संगठित प्रयास करें जिससे वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके।

**संदर्भ सूची:**

1. कुमार, कृष्ण (1993). प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास.
2. अग्रवाल, उमेशचंद्र (2011). ग्रामीण रोजगार एवं हस्तशिल्प.
3. शर्मा, राकेश निशित (2013). भारतीय हस्तशिल्प उद्योग.

Received **06 January. 2025**; Accepted **20 January. 2026**. Available online: **30 January. 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 01, January. 2026

4. अंसारी, खुदैजा परवीन (2023). Major Handicraft Industries of India. Anthology – The Research.

5. भारत सरकार. हस्तशिल्प मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्टें.

6. UNESCO. Handicrafts and Cultural Heritage.

Received **06 January. 2025**; Accepted **20 January. 2026**. Available online: **30 January. 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License